मुक्ति प्राप्त करनी है तो श्री जी साहेब जी की शरण में आना होगा

परम आदरणीय सुन्दरसाथ जी! श्री जी साहेब की मेहेर से पूरे विश्व में श्री कुलजमस्वरूप के १२००० परायण पूर्ण करने का कार्यक्रम जागनी अभियान के माध्यम से चलाया जा रहा है। यह एक ऐसा विशिष्ट आयोजन हो गया है कि श्री जी की वाणी का अध्ययन भी साथ-साथ करने का अवसर मिल रहा है। श्री जी की वाणी में कुल बारह चौपाइयां ऐसी आती है जिनमें जगदीश नाम का वर्णन भिन्न-भिन्न तरह से आता है। इस बार इसी की खोज की गई और अन्तःकरण से यह प्रेरणा उठी कि जगदीश नाम पर जो बारह चौपाइयां दी गई है और जगदीश शब्द की महत्ता का वर्णन भी विशिष्ट है आओ क्रमशः चौपाइयों का वर्णन करते हैं।

बारे मात्र एक अखर, अखर (अक्षर) श्लोक बत्तीस।
छल एते आड़े अर्थ के और खोज करे जगदीश।।
(सनंध कि० प्र० १७ चौ० ११)

अखर एक बारे गमां बोले, एवा श्लोक मांहे बत्तीस।
एक छल आंणी अर्थ आडो, खोले छे जगदीश।।
(कलस गुजराती प्र० ६ चौ० ६)

श्री जी ने उपरोक्त दो चौपाइयों में स्पष्ट किया है कि संस्कृत के एक श्लोक में बारह मात्रा होती है और बत्तीस अक्षर होते हैं। एक- एक श्लोक के कितने ही अर्थ निकलते हैं, फिर भी जगदीश की खोज ज्ञानीजन इन श्लोकों के माध्यम से करते हैं। इसलिए जिन श्लोकों का एक स्थिर अर्थ नहीं निकलता, उसके माध्यम से उस एक ईश्वरों के ईश को कैसे प्राप्त किया जा सकता है। यहां पर जगदीश शब्द का प्रयोग पूर्ण ब्रह्म के लिए किया गया है। यही नहीं जगदीश को जाने बिना सिर पर जम की मार पड़ती है अर्थात मरन-जीवन का कार्यक्रम चलता रहता है यह भी श्री मुखवाणी में स्पष्ट लिखा है कि :-

लाठी तेरे लोक पर, संजमपुरी सिरदार।
जो माने नहीं जगदीश को, तिन सिर जम की मार।।
(सनंध प्र० १७ चौ० ३४)

तेरह लोको के ऊपर बैकुण्ठ में भगवान विष्णु मालिक है। जिसने उनकी पहचान कर पूजा नहीं की उसे यमराज की मार खानी पड़ती है। इस प्रकार जगदीश का अपना एक स्थान एवं महत्व तो इस संसार के त्रिदेवों में तो पहले से है ही।

धनी मेरे कहो वाही वचन, जीव बोहोत दुख पावे मन।
तो तप करो कल्पान्त एकईस, तो भी जुबां न वले कहे जगदीश।।
(प्रकाश हि० प्र० २६ चौ० ४६)

म्हारा धनी तमे कहो तेज, वचन जीव घणू दुख पावे मन।
जो तप करो कल्पान्त एक बीस, ताहे न वले जिभ्या एम कहे जगदीश।।
(प्रकाश गुजराती प्र० २८ चौ० ४६)

लक्ष्मी जी कहती हैं कि मेरे नाथ! वही वचन कहो। मेरा जीव बड़ा दुखी है भगवान जी कहते हैं कि

Nijanand App

हे लक्ष्मी जी इक्कीस कल्पांत भी तप करो तो भी मेरी जबान नहीं बोल सकती कि पूर्ण ब्रह्म कौन है, कहाँ रहते हैं क्या लीला करते हैं। इस चौपाई में जगदीश शब्द का प्रयोग 'गोलोकी शक्ति' के लिए किया गया है। उपरोक्त दोनों चौपाइयों का एक ही अर्थ है अन्तर यही है कि एक हिन्दुस्तानी और दूसरी गुजराती भाषा में है।

दसम के नब्बे अध्याय, तिनका सार भी जुदा कहा।
ताको सार अध्याय पैतीस, जो ब्रज लीला करी जगदीश।।
(प्रकाश हि० प्र० ३३ चौ० ६)

श्री मद्भागवत के दसवें स्कंध में नब्बे अध्याय है। उनका सार भी अलग से कहा है। इस सार में पैंतीस अध्याय हैं। जिसमें श्री कृष्ण की ब्रज लीला का वर्णन है। इस चौपाई में जगदीश शब्द का प्रयोग श्री कृष्ण के लिए कहा गया है। इस प्रकार जगदीश शब्द विष्णु भगवान और श्री कृष्ण दोनो के लिए प्रयोग किया गया है।

जगदीश नाम विष्णु को होय, यों न कहूँ तो समझे क्यों कोए।
जो प्रेम लीला श्री कृष्ण जीए करी, सो गोपन में गोपियों चित धरी।।
(प्रकाश हि० प्र० ३३ चौ०६)

संसार के लोग जगदीश नाम से विष्णु भगवान को समझते हैं, इसलिये जगदीश शब्द का प्रयोग किया है। ऐसा न कहूं तो लोग समझेंगे कि श्री कृष्ण जी ने जो प्रेम लीला की है उसे ग्वालों और गोपियों में केवल गोपियों ने चित में धारण किया है। यहां पर जगदीश शब्द का प्रयोग विष्णु भगवान के लिए किया गया है किन्तु श्री कृष्ण के रूप में प्रेम लीला की गयी, प्रेम लीला तो विष्णु द्वारा की नहीं जा सकती वह तो पूर्ण ब्रह्म ही कर सकते है। अर्थात श्री कृष्ण के केवल बाल स्वरूप पर ही पूर्ण ब्रह्म का आवेश रहा है उसके बाद नहीं। इसलिए श्री कृष्ण पूर्ण ब्रह्म नहीं है।

भी ताके बांटे फिर सताईस, चढ़े ऊंचे सुरत बांध जगदीश।
सो बांटे किए असी और एक, पोहोंचे बैकुण्ठ चढ़े या विवेक।।
(प्रकाश हिन्दुस्तानी प्र० ३४ चौ० ४)

इस चौपाई में श्री जी ने संसार की नवधा भक्ति तथा भक्ति किस किसने की इसके बारे में प्रकाश डाला है। फिर नौ बांटकर सत्ताइस किए। इस तरह से नवधा भक्ति वाले पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह से बैकुण्ठनाथ की भक्ति कर ऊंचे चढ़ते है। इसके भी तीन-तीन हिस्से किये और इक्यासी पक्ष हुए। जिसके विवेक से चलकर बैकुण्ठ पहुंचते है। नवधा प्रकार की भक्ति ये हैं :- श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चना, वन्दना, दास्य, साखा, आत्म निवेदन। इन भक्तियों को किन-किन ने किया उस पर प्रकाश डाला गया है कि श्रवण-राजापरीक्षत, कीर्तन-शुकदेव, स्मरण प्रहलाद, पाद सेवन- लक्ष्मी, अर्चना- राजा पृथु, वन्दना-अक्रूर, दास्य-हनुमान, सखा- अर्जुन, आत्म निवेदन- राजा बली ने की है। हर एक भक्ति को तीन-तीन तरह से सुना और फिर प्रत्येक भाव की भक्ति तीन तरह से लाना। ये हैं ८१ पक्ष। इस प्रकार जगदीश का स्थान ऊँचे स्थान पर रखा गया है।

छेतरवां हींडो जगदीश ने, ते छेतरया केम करो जाय।
पास बीजाने माडिए, जाय आपोपूं बधाए।।
(किरंतन प्र०१२८ चौ० ११)

Nijanand App

श्री जी ने इस चौपाई में साफ-साफ कहा है कि तुम भगवान को ठगने के लिए चलते हो, परन्तु वह किसी तरह से ठगे नहीं जाते। दूसरों को फसाने के लिए जो चलता है वह फंदे में स्वयं ही फस जाता है।

वेदो कहा आवसी, बुद्ध ईश्वरों का ईस।
मेट कलियुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीश।।
(खुलासा प्र० १२ चौ० ३१)

अब सुन्दरसाथ जी आप ही बताईये जब श्री जी ने स्वयं ही उपरोक्त चौपाई में कह दिया कि वेदो ने भी कहा है कि सब ईश्वरो के मालिक जागृत बुद्धि के अवतार श्री प्राणनाथ जी आएंगें और कलियुग की राक्षसी बुद्धि को समाप्त कर सबको बहिश्तों में अखण्ड करेंगें। इस चौपाई में जगदीश शब्द का प्रयोग पूर्ण ब्रह्म, सच्चिदानन्द अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के लिए किया गया है।

अब आप ही बताईए जब श्री जी ने ही जगदीश नाम का प्रयोग पूर्ण ब्रह्म के लिए वाणी में कर दिया है तो धर्माचार्य, गद्दीधारी, ईर्ष्या करे तो इसमें तो उनका अपना दोष है। बार-बार उठता है प्रश्न कि कभी कहीं से कभी कहीं से जगदीश तो अपना अलग ही रास्ता अपना रहा है। किन्तु वास्तविकता यह है कि सरकार साहब कुलजम स्वरूप का सही अर्थ सुन्दरसाथ को समझा रहे हैं जो अब तक छुपा कर रखा हुआ था। यही सच्ची जागनी का रास्ता है जो सरकार साहब जागनी अभियान के माध्यम से भी सुन्दरसाथ की सोई आत्माओं को जागृत कर रहे है।

नेऊ मांहे अध्याय पांत्रीस, जे ब्रज लीला कीधी जगदीश।
जगदीश वचन एणे न केहेलवाय, एम न कहूं तो विगत केम थाय।।
(प्रकाश गुजराती प्र० ३३ चौ० ५)

श्री मुखवाणी में वर्णन है कि श्रीमदभागवत के नब्बे अध्यायों में पैंतीस अध्यायों तक श्री कृष्ण, जगदीश की ब्रज लीला का वर्णन है। इन श्री कृष्ण को जगदीश कहना ठीक नहीं। यदि ऐसा न कहूं तो भेद कैसे खुलेगा?

सिपारे चौबीस में मिने, लिखी सूरत अबलीस।
जल थल सबो में ए कहा, याको पूजे कर जगदीश।।
(मारफत सागर प्र० ३ चौ० २)

कुरान के चौबीसवें सिपारे में शैतान की सूरत का बयान है। वहां लिखा है कि जल, थल सबमें अबलीस समाया है। दुनिया इसे अपना परमात्मा मानती है। अलग-अलग धर्मग्रन्थों ने अपनी-अपनी तरह से विवेचन किया है यहां पर जगदीश शब्द का अर्थ अबलीस के लिए लगाया गया है किन्तु जो जगदीश का अर्थ श्री प्राणनाथ जी द्वारा लगाया गया है वही तो सर्वोपरि है। यह तो उसी प्रकार है जैसे कृष्ण की त्रिधा लीला अर्थात् नाम एक रहा किन्तु लीला भिन्न-भिन्न तरह से की गयी है। सुन्दरसाथ जी यह तो विवेचना श्रद्धा भाव पर आधारित होते हुए भी मुख्यत श्री मुखवाणी पर आधारित है। फिर इसे अन्यथा न लेवें कि किस प्रकार के विवेचन प्रकाशित किये जा रहे है। सुन्दरसाथ जी इस लेख के अध्ययन, मनन, चिन्तन के उपरान्त जो सुझाव हो उनसे अवगत कराने की अनुकम्पा करेंगें तथा जो त्रुटि हो उसके लिए क्षमा भी करेंगे।।

आपकी चरण रज
डा० रामकुमार त्यागी
सुन्दरसाथ लखनऊ

Nijanand App